DATE / /
PAGE No.

(2)

## ज्ञान व सूचना में समानता –

सामान्यतः हम या हमारा समाज ज्ञान व सूचना में भेद नहीं करता है ज्ञान में अन्तर्निहित और मौन विशेषताएं होती हैं जो सूचना की अपेक्षा सूक्ष्म किस्म की होती है।

इस समाज में दो प्रकार के बुद्धिजीवी होते हैं।
(i) लोक बुद्धिजीवी
(ii) नीति बुद्धिजीवी

लोक नीति एक सम्पूर्ण विषय वस्तु है। जबकि नीति बुद्धिजीवी अपने ज्ञान का केवल एक लिखित और सैद्धान्तिक रूपरेखा तैयार कर देते हैं जिससे भारत ज्ञान का उपभोक्ता बनकर रह गया है। स्वयं इसकी व्याख्या या नये खोज में रुचि नहीं रखता है।

ज्ञान व सूचना दोनो प्रत्ययो में सम्बन्ध है। उदाहरणार्थ सूचना का निष्कर्षण मूल आंकड़ों से होता है ज्ञान का उद्भव भी मूल आंकड़ों से होता है।

ज्ञान के निर्माण व इसके हस्तान्तरण में आधीगम कर्ता की भूमिका -

ज्ञान ग्रहण करने की प्रक्रिया विद्यार्थी विद्यार्थि के सक्रिय ज्ञान सृजन की प्रक्रिया बन जाती है। कई स्वारी- शारीरिक गतिविधियों में दिमाग की सम्बद्धता भी शामिल होती है।

वर्तमान समय में हम जानते है कि ज्ञान के निर्माण व उपयोग की क्षमता किसी भी व्यक्ति हेतु बहुत लाभप्रद माना जाता है। ज्ञान का निर्माण एक द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया है। जिसके व्यक्ति व उसके वातावरण के बीच विभिन्न तथ्यों को गतिशील क्रियाओं द्वारा स्थापित किया जाता है।

ज्ञान का निर्माण एक चक्रीय क्रम है। जो विरोधी सम्प्रत्ययों जैसे- व्यवस्था - अव्यवस्था, अंश - पूर्ण, मन व शरीर, मौन व स्पष्ट आदि का साथ लेकर चलता है।

Date / /
Page No.

## ज्ञान का निर्माण -

ज्ञान का निर्माण मानवीय संरचना व सामाजिक संरचनाओं के बीच अन्तर्क्रियाओं के द्वारा होता है। वातावरण के साथ हमारी क्रियाएं व प्रतिक्रियाएं विरोधी प्रक्रिया के द्वारा ज्ञान उत्पत्ति या वृद्धि करती है।

हम अपने शैक्षिक कार्यों को एकाग्रता के मुख्य दो स्तरों के साथ करते है।

व्यवहारिक एकाग्रता
असम्बद्ध एकाग्रता

## ज्ञान की उत्पत्ति

बुद्धिवाद (Rationalism) के अनुसार ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है। चूंकि बुद्धि को ज्ञान का मुख्य साधन माना गया है। इसलिए इस मत के अनुसार इसे बुद्धिवाद कहा गया है।

लॉक के अनुसार - ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है।

Scanned with CamScanner